खंड 3

सोच ज़रा सी

प्रकृति, रिश्तों और जीवन मूल्यों का प्रतिबिंब

सोम नाथ ठक्कर

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Mr. Som Nath Thakar 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-748-6

Cover Design: Goon Tandon
Typesetting: Sagar

First Edition: October 2025

अनुक्रमणिका

एक बच्चे की प्रार्थना 1
पूराना वक़्त था ऐसा 2
हर युग में प्रभु जी आते 3
प्यार माँ का होता ऐसा 4
किसान की दर्द भरी बादलों से पुकार 5
सावन आया 6
समझदारी 7
क्यूँ माने बुढ़ापा आया 8
ज़िन्दगी के रंग 9
रूप भगवान का ही है मेरी माँ 10
भलाई..11
यादगार दिन 12
गणना ऐसे भी हो सकती 13
निःस्वार्थ सेवा 14
युगों-युगों का साथी.. 15
लकीरें चेहरे की 16
हमारी प्रकृति की यह देन 17
दुलार माँ का.. 18
मत देखो ख़ुशियाँ छोटी-बड़ी 19
परिन्दों से सीखे जीना 20
बरबाद न करें अन्न 21
न करें बरबाद काट करके पेड़ इस धरती को 22
वह सुन्दर सी जगहें..23
न गवाओ अपना क़ीमती वक़्त 24
मेरा मन ही है मेरी सोच 25
गुज़रा वक़्त फिर न आता 26
पूराना ज़माना.. 27
छोटी सी बात 28

कैसी सुन्दर है ये प्रकृति हमारी.. 29
यहीं दुआ माँगे... 30
माँ.. 31
बदलते जीवन की कहानी 32
बदला वक़्त 33
धूप.. 34
ख़ामोशी में भी होती बातें... 35
ये पड़ाव है आख़री ज़िंदगी का 36
यही पर ही हैं सब कुछ 37
बच्चों और बड़ों में ये अंतर 38
अंतर क्यूँ.. 39
बच्चों और बड़ों में ये अंतर 40
किसने सिखाया हमें ऐसा करना.. 41
भगवान के दर पर कैसे पहुँचे 43
कष्टों का काम है आना... 45
धूप जो सूर्य देता... 46
प्रकृति को सुन्दर रहने दो.. 47
ईश्वर का हाथ सबके साथ 48
ईर्षा-द्वेष, लालच और मतभेद 49
नज़ारे कहां गये सब के सब 50
अनोखी ख़ुशी 51
ग़लतियाँ सुधारे कैसे.. 52
बदलते रिश्ते.. 53
माँ तेरी याद में... 54
हर युग में प्रभु जी आते... 55
शक्ति माँ के प्यार में.. 56
बातें हो कैसी 57
एक बार पूकार करके देख.. 58
मानव.. 59
खोज कैसी... 60

सावन आया 61
समझदारी 62
सफर...63
मोसम ने ऐसी करवट बदली 64
सुन्दर दीदार प्रभु के 65
किसान की बादल से पुकार... 66
क्या खोया,क्या है पाया 67
सुन्दर दीदार प्रभु कें 68
भलाई 69
जीवन मेरा..70
मेरे देश के शाहिद 71
मेरी माँ 72
झुकना 73
शिक्षा फूल की...74
ख़ुशियों हमारी 75
स्नेह माँ का बच्चों के साथ..76
आक्सीजन का महत्व... 77
अच्छा लगेगा उनको भी...78
अद्भुत नज़ारे 79
सुन्दरता फूलों की.. 80
प्यारा सा बचपन 81
यादे बचपन की 82
बरसात की खुशियाँ वा गम 83
सपना 84
माँ मेरी का त्याग..85
प्रेम प्रभु जी का हम सब पर 86
वक़्त हूँ ही गुज़र जाता 87
क्या कहता हैं मन मेरा...88
माँ ! एक बार कहो न..89
क्यूँ सोचें इतना 90

अच्छे वे पूराने दिन 91
कैसी सुंदर प्रकृति है हमारी 92
नन्ना बच्चा और उसका चंदा मामा 93
बच्चों और बड़ों में ये अंतर 94
भगवान के दर पर कैसे पहुँचे 95
जरूरत वा ज़रूरतमद.. 97
भगवान् हर जगहा रहते.. 98
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं 99
किसान की दर्द भरी बादलों से पुकार 100

एक बच्चे की प्रार्थना

सुनो सुनाता हूँ, एक बच्चे के,मन की छोटी सी, बात
आज क्यूँ, आ रही, उस बच्चे को, माँ अपनीं की, याद
क्या मुझ, को भी दोगे, कभी ये स्नेह भरा प्यार, अपना
माँ की तरह, पड़ेगा मेरा, इन कोमल हाथों को, थामना
आप सबको, दिख जाऊँगा, मैं कहीं खड़ा सड़क के, मोड़ पे
अपने बच्चों, के जैसे, मुझे भी,स्कूल में पढ़ाओगे, कभी
भेजोगे मुझे भी,पढ़ने के लिये, अच्छे स्कूल में, अभी
क्यूँकि, भीख मांगने से,,मेरा मन अब तो है, घबराता
बस अब,मैं भी किसी अच्छे से,स्कूल मे पढ़ना, चाहता
यही है,बस सिर्फ़,बहुत छोटी सी,मेरी पूरी करोगे, कामना
अब बताओ कोई है,ऐसा धर्मात्मा इस दुनियां में, जो करे सामना

पूराना वक़्त था ऐसा

आओ मैं तुम्हें गुज़रे, वक़्त की एक बात, सुनाऊँ
आपको मैं 80 साल,पीछे की ओर करके,जाऊँ
उन दिनों जब, कोई बच्चा, स्कूल में पढ़ने, जाता
पढ़ने के वास्ते,उन दिनों एक'कैदा',ही था आता
**

दो पन्नों की, तब एक, हुआ करती थी, किताब
क़ीमत इसकी होती थी, एक पैसा, करो विचार
इन किताबों, के दाम,उन दिनों हुआ करते कम
ताकि इन को, ख़रीद सके गरीब भी,जैसे थे हम
**

अ-आ, इ-ई,उ-ऊ, क ख ग, ये सब इसमें, होता
इस पुस्तक से तब, यही सब तो, पढ़ाया जाता
बस यही तो पढ़ता, रहता बच्चा, पूरे के पूरे साल
पहला साल तो, इस तरह गुज़रा, देखा ये कमाल
**

आया जब,, दुसरा साल, किताब के पन्ने, थे चार
2 से ले कर 10 तक,'पहाड़े'इस किताब में, आते
इन्हीं को हम, सारा साल,पड़ते और इसे, दोहराते
तब हमे समझाते कि ये ज़िंदगी में, बड़े काम आतें
**

अब आता है,साल तीसरा और क्लास,हो गईं तीन
सिर्फ़ बस फर्क इतना ही, किताबों के पन्ने, रंगीन
ऐसे ही हर साल, किताबें बदल कर, बड़ी हो जाती
संतोष बस यही रहता कि, यह कम पैसों में, आती
**

इस तरहें पढ़ते थे, स्कूलों में सब के सब, हम बच्चे
जाने न कहा,खो गये वो दिन,जो ग़रीबों के थे,अच्छे

हर युग में प्रभु जी आते

प्रभु जी,बच्चे को,इस तरह से, रोने पे, पूछते
क्यूँ हो ऐसे, धरती पर लेटे, क्यूँ हो यूँ उदास
क्या है कारण, कहो न, हूँ न मैं, तुम्हारे पास
बच्चा प्रभु जी को, हूँ अपना दर्द, ऐसे बताता
उस डिब्बे में रखी,है मेरी ही,पसंदीदा मिठाई
माँ मेरी उसे, वहाँ पर ऊँची जगहें, पे रखवाई
मेरा तो क़द है छोटा, हाथ मेरा, पहुँच न पाएँ
इसलिये हूँ उदास, वह डिब्बा कैसे,पास आएँ
युग बदले चाहे, घटनाएँ वहीं बार-बार,आती
घूम फिर के, उन्हें ही, हम बार-बार, दोहराते
प्रभु कहते है, मैंने भी एक दिन,मक्खन चुराया
माँ मेरी ने भी,कई बार इसे,ऊँचा था रखवाया
तब मैंने भी, इसी तरह की,तरकीब थीं,लगाई
अब युग तुम्हारा है,बस सोच ज़रा सी लगाओ
कुर्सी जो पड़ी वहाँ,उसे खेच के,पास ले लाओ
चड़ जाओ ऊपर,उठा लो वे डिब्बा, समझ आई
खा लो मिठाई,यहीं तरकीब,मैंने भी थी लगाई

***

प्यार माँ का होता ऐसा

माँ मेरी के, प्यार में,होती हैं
इतनी, ताक़त
जो पत्थर,तक को भी, देती
हैं, पिघला
ऐसी अनोखी ताक़त,न पास
किसी के है, न होगी
तब सारी,दुनियां की,ताक़त
इसमें, आ जाएं
जब परिवार पर,किसी तरहें
की परेशानी आएं
माँ ही तो है,जो हर,मुश्किल
घड़ी से, टकराएँ
***

किसान की दर्द भरी बादलों से पुकार

हे ! ऊपर से,गुज़रने वालें बादलों, मेरे सूखे
खेतों पर भी, बरस जाओ
देखो सूख रहे है ये खेत,बिन पानी के,सब
ज़रा सा रहम तो, दिखाओ
खुश हो जाते,खेत हमारे भी,यदि आप इन्हें
भी, पानी से, भर देते
उपकार सदा मैं और ये खेत,आपका मानते
यदि थोड़ा पानी, ये भी पा लेते
भरे पड़े हैं जो खेत, पहले से ही, क्यूँ उन्हीं पे
बार-बार ही, बरस जाते
अपना सिर झुका करके,सूख रही ये फसलें
पुकारें,बादलों यहाँ पे, क्यूँ न आते
जिन खेत में, पानी भरा है, उन्हीं को यह सूखे
खेत बार-बार, निहारते
सोचते कब तक,आएगी मेरी भी बारी,पानी में
नहाने की, यही विचारते
यह बिन पानी के फसलें,तब तक सूख, ही न
जाएँ, सारी की सारी
न करो देर,अब और बरसने में, पहले कर चुके
देरी, अब तो मेरी, बारी
सुन करके, दर्द भरी पुकार,छोटे से बादल का
दिल दुःख से, भर गया
वो नीचे की ओर झुका और उस खेत को तुरंत
बरस के पानी से, भर दिया

सावन आया

कैसा सावन का महीना आया
बादलों ने भी तो शोर मचाया
बिजली चमकी चम चम चम
चमक देख करके डर गये हम
सूर्य छीपा है बादलों के पीछे
अंधेरा छा सा गया आँखें मींचे
बुंदे पानी की देखो गिरती ऐसे
फ़व्वारा चल पड़ा नभ पे जैसे
यह कैसा अद्भुत सा है मौसम
मोहन की छत पर तो की धूप
मेरी छत पर क्यूँ हो रही छाया
सब बच्चों को ये मौसम भाता
क्यूँकि पेड़ों पे झूला बंध जाता
बच्चे यू झूलते और शोर मचाते
हंसते गाते इस पर झूलते जाते
हर मौसम होता अच्छा जो आएँ
सब मिलजुल करके यदि मनाएँ
इस बात को सदा ही है अपनाना
भेदभाव घृणा को मत पास लाना

समझदारी

बच्चा चाहें कोई भी हो,अगर ग़लतियाँ करे
तो उसे, तुरंत टोकों
मारो तो उसे कभी न, बस ऐसा फिर न करने
के लिये, ज़रूर रोको
बच्चे इस बात को, समझने में कम-अधिक
वक़्त, लगा सकते
जब भी वो महसूस करे, यही सब करना मेरे
लिये नही ठीक, क्यूँ करते
वो तो होते ही हैं, चुलबुले,भोले से, प्यारे और
बड़े, नटखट नादान
इसीलिये तो वो,अपनी की गई ग़लतियों को
जल्दी लेता, है मान
स्वच्छ पानी की ही, तरहें होते बच्चे,जो ईर्षा
के समुद्र में, रहे तैर
अपने बच्चों की तुलना, न कभी दूसरों से करे
न ही उन्हें,समझाएँ वह हैं, ग़ैर
यह तो वह अबोध सा बच्चा,कभी न समझेगा
और उसे ऐसा, न बनाना
यह जो भेदभाव भरी घृणा की बातें,वे न समझ
सके, न ही समझाना
***

क्यूँ माने बुढ़ापा आया

आ गया मुझ पे बुढ़ापा इसे कभी
मत मानो
बस वापिस आ गया मेरा बचपन
ऐसे जानो
कैसे मैंने बचपना गुज़ारा बस यह
बताने आया
इस लिये अपने साथ एक ठोस सा
सबूत लाया
हंस के गुज़ार दो आये जो मुश्किल
से भरे दिन
आज फिर से ही क्यूँ न हम बचपन
के दिन ले गिन
बुढ़ापे में बचपन की तरहें क्यूँ न मैं
जीना सीखूँ
कैसे भगता है मेरा बुढ़ापा मैं क्यूँ न
यह नज़ारा देखूँ
भूल जाएँगे हम सब कैसे यह समय
चला गया बिना बताए
तो क्यूँ न इस मुश्किल वक़्त को भी
हंस कर गुज़ारा जाएँ

ज़िन्दगी के रंग

कट गईं, लड़ते झगड़ते, ये हैं जो
ज़िन्दगी हमारी
यह फिर भी, मिटा न पाईं, दिलों
से,लालच,ईर्षा हमारी
सोच करके अगर देखा जाएं,कि
हमने क्या,पाया ?
ऐसा करने पे,हमारे हाथों में,क्या
कुछ, आया ?
शान्ति मन की गवाई, चिन्ताओं ने
रखा है, घेर
हर तरफ़ है,अंहकार,लालच,घृणा
और गुंजता है, तेर-मेर
यही मिल पाया, हमें लड़-झगड़ के
दुनियां से, सौग़ात
क्या इसी पर गर्व करते हो,या यही
है हमारी, औक़ात ?
***

रूप भगवान का ही है मेरी माँ

जैसे ही भक्त की, दर्द भरी, पुकार सुनी
भागें-भागें भगवान, आएं
वैसे ही इस जग में, माँ बच्चों को,दर्द में
देख, तुरंत ही समझ, जाएं
भगवान ने, अपना रूप दे कर,माँ को ही
भेजा, संसार में,प्यार बरसाने
खुद भी फिर आ पहुँचे,इसी संसार में माँ
का प्यार, यहाँ पाने
प्रभु जी हमेशा ये,अद्भुत सी लीलाएँ,युगों
युगों से आ करके, दिखाते
इस धरती पर फिर, आ कर नन्ने, बच्चों
के संग रास, रचाते
जब-जब इस धरती पे,अत्याचार पनपा
और दुःखों ने, घेरा
तब-तब प्रभु जी ने,अपना रूप बदल कर
जग में डाला, फेरा
मैं ही मूर्ख इन्सान,माँ व भगवान दोनों को
ही गया, भूल
अपने ही बनाएं,लालच,ईर्षा-द्वेष,के झूले
मे रहा था, झूल
जानता था मैं,एक न एक दिन,ये हिंडोला
जाएगा, टूट
याद तभी आएगा, क्यूँ न, मैंने तब, पकड़ा
माँ या भगवान का आँचल, मज़बूत

भलाई

मैं ही हूँ, जो कर सकता हैं, किसी की
भी भलाई
इस ग़लतफ़हमी में, कभी भी न रहना
मेरे बहन-भाई
भगवान जी की नज़रें, जब किसी पर
मेहरबान हो, जाएँ
तभी तो मन में,दूसरों के प्रति, भलाई
करने के विचार, आएं
ऊपर बैठ करके भी,, ईश्वर करा रहे
आप से ही, सब वैसा
क्यूँकि वो समझते कि, आप ही कर
सकते है, काम ये, ऐसा
जब आप करते हैं,किसी के लिये भी
थोड़ी सी, भलाई
तब धन्यवाद, ज़रूर देना, प्रभु जी को
क्यूँकि मेरी भी उन्हें, याद आईं

यादगार दिन

हम बैठ करके कभी, बाप के कंधे पे
देखा करते थे, मेले
अब मना रहे है, बस Fathers Day
बैठे हुए, अकेले
अब तो दूर बहुत दूर, हो गये, रिश्तेदार
एक-दूसरे से, सब
क्यूँ न हम,मना ले इसको,इसी तरहें से
ही हम, अब
चलो अच्छा है, एक दिन ही सही,परंतु
उसकी याद, तो आई
अपनों को याद करके, इस दिन की दे
रहे है, खुश हो कर, विदाई
सारे के सारे Day, ख़ुशी-ख़ुशी से, हम
सब लोग, मनाएँ
सह परिवार,हम सभी मिल करके, एक
दूसरे के घर, जाएँ

गणना ऐसे भी हो सकती

एक आदमी, जब इस दुनियां में, था आया
दो को, जैसे ही उसने,अपने साथ,मिलाया
तीन बन गये, उस दूसरे के,हाथ मिलाने से
चार फिर बने, प्यार और अधिक,पा लेने पे
पाँच उगलियों ने, उस के सिर पे, हाथ फेरा
छँट गया,तुरंत ही,उस पे,छाया हुआ अँधेरा
सात ऋषि भी,उस समय,देख रहे थे, ये ऐसे
आठ बने ये, आ करके मिला,ध्रुव तारा जैसे
नौ ग्रह तब,चमकते हुए, ये सब देखने आये
दस पूज्य गुरुओं को,, अपने ही साथ, लाएं

निःस्वार्थ सेवा

पेड़ जो कभी नहीं सोचते, जो देते जा रहे
हम सबको, छाया
उन के नीचे बैठने वाला,अमीर या ग़रीब
कौन सा आदमी, आया
सूर्य जो फैला रहा, हर जगहों पर अपनी
रोशनी कभी नहीं, देखता
यह किसी, अमीर का, ऊँचा महल है, या
फिर गरीब की, झोपड़ी
चंदा मामा, जो दे रहा, हमें शीतल चाँदनी
क्या कभी, सोचता ?
मुझे यही सब,बांटने से,कुछ तो ज़रूर हो
जाए, आमदनी
नदियाँ भी, जो ले कर चलती,शीतल शुद्ध
जल, वो भी न, कहें
मेरा जल जो इतना,शीतल व शुद्ध ,न डाले
इसमें किसी तरह का, मल
प्रकृति हमारी हमेशा हमें, यही तो सिखाने
के लिये, आई
निःस्वार्थ सेवा करने, पर ही तो, महापुरुषों
ने इतनी मुहब्बत, पाई

युगों-युगों का साथी

एक-एक करके, सभी छोड़ देते है
हमारा, साथ
परन्तु मेरे प्रभु जी, कभी भी न छोड़े
पकड़ा हुआ, हाथ
इतना सारी कृपा, प्रभु राम जी, जब
हमारे ऊपर, करते
क्यूँ फिर भी हम,हमेशा न रहने वाले
कष्टों से, इतना डरते
यह सब जानते हुए,कि परम पिता न
आने देंगे,हमारे ऊपर कोई,कष्ट
तो क्यूँ न छोड़ दे, बेवजह की चिन्ताएँ
करे कर्म अच्छे,हो करके, मस्त
***

लकीरें चेहरे की

इन चेहरे की,लकीरों के हैं
अलग-अलग, काम
होंठों पर अगर यह,हैं होती
तो मुस्कान,कहलाए
हमारे माथे पे, जब ये आएँ
तो क्रोध, बन जाएँ
आँखों के, पास से,गुजराती
तो कहकहे,में बदलती
इन्हीं लकीरों के, अलग रंग
रुप बदले, न छोड़े, संग

हमारी प्रकृति की यह देन

जितने भी यह हैं, सुन्दर-सुन्दर, नज़ारे
सबके सब, धरती पर हैं, हमारे
कहीं झरने,नदियाँ,पहाड़,कहीं घने वन
जो होने न दे, मन से ख़ुशियाँ, कम
क्यूँ फिर,हम इन को,उजाड़ने पर हैं तुले
इसी से, बिन पैसा, शान्ति हमें, मिले
इस धरती की हरी,घास पे,उछलते हिरण
छन के पड़ती, उन पे, सूर्य की किरण
ऐसा नज़ारा देख कर, क्यूँ न हो, एहसास
प्रभु राम जी ने, यही बिताया वनवास
इस लिये तो प्रकृति, सब को,यह सिखाएँ
प्रेम से रहो, तभी इस धरती पर,आएं

दुलार माँ का

क्यूँ है तू दुखीं बेटे,क्या है, ग़म
किस लिए आँखें, तेरी नम
माँ अपने,बेटे से,करती सवाल
बेटा रोता,न दे पाता,जबाब
न तो यह कहानी, न ही सपना
यह तो है, सच्चाई
है कोई, दुनियां में, ऐसा माँ के
सिवाय,जो यें कर,पाईं
सह ही, नहीं सकती, माँ बच्चे
पे आएं, दुःख की, घड़ी
इसलिये तो माँ अकेले,हो जाएं
मुसीबत के सामने, खड़ी
***

मत देखो ख़ुशियाँ छोटी-बड़ी

यह छोटी-छोटी ख़ुशियाँ ढेरों सारी,आतीं
ज़िन्दगी में, हमारी
परन्तु हम बड़ी ख़ुशी पाने के पीछे, भागते
रहते,छोटी को भी,पकड़ न पाते
ज़िन्दगी भर यहीं सिलसिला,चलता रहता
इसलिये दुःख, सहता
सोचो ज़रा,क्यूँ न इन,छोटी-छोटी ख़ुशियों
को अपनाएँ और बड़ी बनाएँ
ख़ुशी तो ख़ुशी है, यह छोटी-बड़ी का अंतर
कहाँ से, आया
क्यूँकि जाती हुई, छोटी सी ख़ुशी को, हमने
नहीं अपनाया
जीवन में बड़ी ख़ुशी,पाने के लिये, हमेशा ही
एक-दूसरे से,लड़ते रहते
इस तरह बंद-नसीबी से, छोटी ख़ुशी, जो पा
सकते, उसे भी न पकड़, पाते

परिन्दों से सीखे जीना

एक दिन, बैठा हुआ था, मैं नदी के, किनारे
ले रहा था मैं, उस उड़ते पक्षी के,, ही नज़ारे
वह परिंदा, उस नदी के ऊपर, उड़ता रहता
उड़ते-उड़ते ही, वह पक्षी नदी में, कूद जाता
निकल आता,वो फिर नदी से, वैसे का वैसा
परन्तु चोंच, उसकी में, कुछ भरा होता, ऐसा
चला जाता, उस पेड़ पर,बने घोंसले की ओर
जहाँ पे उस परिंदे के बच्चे,भूखे मचा रहे शोर
अपनी चोंच, डाल देता, बच्चों के, मुँह में, तब
बोलता बच्चों से, तेरे लिये, ही लाया हूँ, सब
इसी तरह, वह दिन भर, कई चक्कर, लगाता
अपने बच्चों, के वास्ते, कुछ न कुछ ले, आता
भर पेट, खाते-खाते,वे भी, बड़े हो गये थे, अब
छोड़ करके, अपना ही घोंसला, चले गये, सब
एक नया जोड़ा,उस घोंसले में फिर,रहने आया
उस परिंदे ने, घर अपना, उसी तरह से, बसाया
सदियों से ये,चलता आ रहा और चलता,रहेगा
किसी का भी,आना तथा जाना, घोंसला सहेगा
सच कहते हैं, घर तो अपना घर, सदा कहलाता
कोई किसी जाति का हो,घर ही है जो अपनाता
झगड़ा फिर किस बात पे,अपना देश अपना रहे
यह जातिवाद, ऊँच-नीच ,नफ़रत,कब तक,सहे
छोड़ दो अब,सब आपस के झगड़े,एक हो जाओ
इन्हीं परिन्दों से ही,कुछ सीख आप भी,अपनाओ

बरबाद न करें अन्न

क्यूँ बरबाद करते हैं हम सब
अपना-अपना खाना
ज़रा सोचो कितने भूखों का
इससे पेट भर जाना
आप जितना खा सकें उतना
ही अगर ले
हो सके अगर तो इस से भी
कम परोसे
ठूँस-ठूँस करके न भरते रहो
अपनी थाली
यदि हो सके तो प्लेट अपनी
को रखें थोड़ा ख़ाली
जितनी भी जगहें थाली में मैं
छोड़ दूँगा ख़ाली
उतने भूखे पेट के लिये ये बने
पेट भरने वाली
इस को भी एक तरह की देश
भक्ति ही कहते
ऐसा ही बार-बार करने पे हम
कइयों की भूख मिटाते

न करें बरबाद काट करके पेड़ इस धरती को

प्रकृति ने तो, भरा था, धरती को, पेड़ों से
बनाएं थे,अनगिनत मुफ्त, आक्सीजन के
यहाँ भंडार
हम काट रहें हैं, इन्हीं पेड़ों को, बिना सोचे
समझे व ख़त्म, करते जा रहे, आक्सीजन
धरती की, तमाम
जब कदर न की, हमने प्रकृति की,जो देती
हमें, सब कुछ मुफ्त, अब भटक रहे है,पैसों
को ले करके, सब
आने वालीं, संतानों के लिये, अभी भी बचा
सकते, हम अपनी प्रकृति को, इन पेड़ों को
छोड़ दें, काटना अब
(सोचों ज़रा यहीं सब हम, करेंगे कब)

वह सुन्दर सी जगहें

सोचो तो, वह सुन्दर सी जगहें, होगी कैसी
जहां पे मिल जाएँगे,सभी बिछड़े हुए,साथी
उस जगहें का,नाम क्या होगा, नहीं जानता
कोई तो ऐसी, जगहें ज़रूर हैं, ये तो मानता
उस जगहें पर, जब पहुँचेंगे,तो लगेगा,कैसा
अपने खो चुके,परिवार को, पा लेते है, जैसे
इसलिये तो,वह जगहें,मन्दिर ही, कहलाती
मैं मानता हूँ,ऐसी जगहें को घृणा,न छू पातीं
हमारे लिए तो वे स्थान,एक मन्दिर,कहलाए
हर कोई तो,वहीं पर, आख़िरी समय,पे जाएँ
वहाँ पहुँच कर, निपटारे होगे, किये जो, काम
तभी तो, उस जगहें का, स्वर्ग ही रखा है, नाम
***

न गवाओ अपना क़ीमती वक़्त

गँवा न देना,अपनी सारी ही ज़िन्दगी,यूँही चिन्ता, करते-करते
सोचो क्या पाया व खोया,इस ज़िन्दगी में मैंने, गिरते-पड़ते ?
सदा चिन्ताएँ, दुःख देतीं रही, मेरी ज़िंदगी के, रहते-रहते
छोड़ क्यूँ न दे, चिन्ताएँ सारी,इस को व्यर्थ जान करके,धीरे-धीरे
हंसते हुए जी ले,, बचा है जो, थोड़ा जीवन मेरा, ज़ोर- ज़ोर से
कहीं फिर से खो न जाएँ, हंसी मेरी, दुनियाँ के इस, शोर-शोर में
अब तो सुन ले,मन की बात,जो है भी सही वक़्त के ही, रहते-रहते
क्यूँ यूँही,बिता रहे हो,ज़िन्दगी अपनी,सिर्फ़ दुःखों को, सहते-सहते
इसीलिये अच्छा है,बटोरो बिखरी, ख़ुशियाँ अपने हिस्से की, हँसते-हँसते
छोड़ दो सब चिन्ताएँ,कह गये लोग, दुनियाँ से वह, जाते -जाते
क्यूँ न हम करके देखे,एक बार विचार पहले ना की, बुरे वक़्त के, आते-आते

***

मेरा मन ही है मेरी सोच

मेरे मन ही है,जो मुझ से ये बार-बार कहता
मुझ को ये, आपस में स्नेह क्यूँ नहीं, भाता
मेरी और यह, मेरे मन, की लड़ाई
कई सदियों से यह, चलती आई
जीत हमेशा ही, मेरे मन की होती
क्यूँ फिर, मेरी सोच, ऐसे ही सोती
मन की बात को,सिर्फ़ ध्यान दे करके, सुनो
तभी इस पर अपनी,सोच कीराय को, बुनो

गुज़रा वक़्त फिर न आता

जैसे जैसे वक़्त गुज़रा,तो ये समझ में,आया
आदमी व पशु को, एक जैसा ही, क्यूँ पाया
देखा दोनों के साथ,होता व्यवहार,एक जैसा
बुड्ढे हो जाने पे, दोनों को ही,छोड़ देते हैं, वैसे
सभी तो यहाँ पर भी,एक जैसे नहीं,हो सकते
परंतु कुछ तो ज़रूर है,बुद्धि से ज़रा से, सटके
सभी के माँ-बाप तो होते हैं,एक-दूजों समान
तो फिर,, बिना सोचे, क्यूँ करते हो,,ऐसे काम
वह कौन है, जो मेरी ज़िंदगी पे, हो गया हावी
सोचो हमने, किस से कर ली, यह कैसी यारी
थोड़ा सा ध्यान, दे करके, देख तो ले,एक बार
रोक दो अपने मन को,नहीं ये रास्ता ठीक,यार
कौन सा है, ठीक रास्ता, अगर हम समझ,पाएँ
तभी तो ग़लत रास्ते को,छोड़ के सही,अपनाएँ
सोचो,यह उमर तो, हम सब पे, एक दिन आनी
तब हम क्या, दें सकेंगे, इस तरह की, क़ुरबानी
यह सब बातें,पहले तो, लगती नहीं, हमें अच्छी
समझ जाएँगे, जब सोचोगे,ये तो सब है, सच्ची
ये वक़्त सदा हाथों से,ऐसे ही तो, निकल जाता
याद करके इसे अब, क्यूँ बार-बार है, पछताता

पूराना ज़माना

क्या ही, अच्छा था, वह भी ज़माना
नहीं पड़ता था,दूर जाना
हम सब, पास-पास ही रहते, दु:ख
दर्द,एक साथ, सहते
गिले-शिकवे,जो भी होते,वो इकट्ठे
बैठ के, बड़े सुलझा, देते
किसी को क्या चाहिए, बड़े सब ये
जानते,छोटे इसको, मानते
रात को कोई भी भूखा,न था सोता
क्यूँकि बँटवारा, समान होता
दूसरों को, क्या चाहिए,सब जानते
इसलिये तो, प्यार बाँटते
काश वैसा ज़माना,फिर से,सब की
ज़िन्दगी में, आ जाएँ
हम लालच,नफ़रत,घमंड छोड़ कर
प्यार की, दुनियाँ बसाएँ

छोटी सी बात

छोटी सी तो है, यह बात, जिसे
सुनते आएँ, दिन-रात
अमल हमेशा ही, इस पर, करो
हंस के सबसे,बात
यही छोटी सी,, बात है, अपना-पन
रहे साथ हमारे, यही एक ही हर-दम
इसको,कभी सोचना भी नही, दूरकरे
हाथ इसका,यूँही हम सब, पकड़े रहे
ये अपनापा,सोचो ज़रा,हमारा ही साथी
क्यूँ फिर, इसको,अपनाने में, शर्म आती
बात तो, छोटी सी,परंतु यही,बड़ी बन, जाएँ
जब हम,दूसरों के दुःख को,अपना बना, पाएँ

कैसी सुन्दर है ये प्रकृति हमारी

कौन है यह चित्रकार, जो भरता जा रहा
तरह-तरह के रंग,इन फूलों में
कोई तो ज़रूर है,जो झूला रहा, बादलों
को,इन्द्रधनुषी झूलो में
क्या ये वही हैं,जिन्होंने इन फूल पतियों
को सुन्दर सा, आकार दिया ?
हाँ ! ये वही है प्रकृति,जिसने हम सबको
अपने साथ रखना, स्वीकार किया
हम फिर भी, कटते जा रहें है, यह हरे भरे
घने सुन्दर जंगलों से, पेड़
बदलते जा रहे हैं, हरी-भरी धरती को,बना
करके, बंजर का ढेर
क्या हम सब बिना,पेड़ और फूलों की इस
धरती पर रह, पाएँगे ?
सोचा है कभी,यह सुंदर-सुंदर रंगों के पक्षी
अपने घोंसले, कहाँ बनाएँगे
ये प्रकृति हमारी, बहुत ही सुन्दर है, इसे ऐसे
सुन्दर ही, रहने दो
ये सब के सब, हरे घने जंगल, सुन्दर रंगों के
फूल, हमारे बच्चे हैं, इन्हें मुस्कुराने दो

यहीं दुआ माँगे

ज़रा सोचो,वहीं परिवार,ही तो सुखी, होता
जिनके घर में, कोई भी, बच्चा भूखा, न सोता
वे जो है परिवार, जिनके बच्चे भूखे, सोएँ
उन के मन से, पूछ करके देखो ये दर्द, कैसा होए
माँगे हम सब, प्रभु जी से,सिर्फ़ यहीं, दुआ
ऐसे दिन ज़िन्दगी में,कभी किसी को न, दिखा

माँ

माँ शब्द, एक बार, कानों में, जैसे ही मेरे, आया
उसने आ करके,मेरे मन का,दरवाज़ा खटखटाया
मैं भी तो कभी, सोया उस की, प्यारी सी गोद में
कितना ख़ुश था, मैं तब, और कितना था, मौज में
जब भी कभी मुझे गहरी,ज़ोरों से नींद थी, सताती
तो उस समय,माँ की वहीं,गोद मुझको नज़र, आती
माँ का प्यार से,मुझे अपनी गोद में उठा हाथों से, थपथपाना
सच्चाई है ,उनके द्वारा किया गया,स्नेह मुझे याद, आना

बदलते जीवन की कहानी

वह दिन, बीत गये, जब मेरे, बाल भी
हुआ करते थे, काले
अब क्या कहूँ, समय के साथ, यह हो
सफ़ेद, जो थे पालें
यह ज़िन्दगी भी,दिखातीं समय-समय
पर, अपने खेल
कल तक तो,सिर पर थे,मेरे बाल काले
अब हो गये,रूई जैसे, सफ़ेद
बालों को सफ़ेद से,काले करने पर,फ़र्क़
बिलकुल, न पड़ता
परंतु मन,यदि कर लिया काला,तो झूठ
बोलने से भी, न डरता

बदला वक़्त

मैं और मेरी प्यारी सी माँ,दोनों
कभी रहते थे, यहाँ
एक दिन फिर,ऐसा आया,हम
दोनों ही हो गये, जुदा
ऐसी ही तो है,यहाँ की यह रीत
मिलते-बिछड़ते, रहे मीत
परंतु आशा तो रहती,फिर यही
मिल जाएँ, हम कहीं
नहीं जानते,किस रूप में,मिलेंगे
पर मिलेंगे ज़रूर, यही
रूप क्या होगा और वह भी कैसा
न जाने, तब
जो भी हो, देखा जाएगा, परन्तु
आशा,क्यूँ छोड़े, अब

धूप

धूप ही तो हैं, सर्दियों में एकमात्र,ग़रीबों का सहारा
जो हमें देते सूर्य देवता, बिना किसी भेदभाव के, तभी तो लगे, प्यारा
यह देते हैं गर्मी, सबको बिना देखे, धर्म और उसकी जाति
नहीं मानते यह अमीरी-ग़रीबी और ऊँच नीच होती कैसी,न ही भाती
सबके ही वास्ते,खुले रहते हैं,हमेशा ही इनके यह द्वार
कोई भी आ-जा सकता है,सबके लिये सदा ये रहते, मददगार
सर्दी से बचाने के लिये, हम सब तक,ये गर्मी पहुँचाते
अपनी गर्मा-गर्म, गोद में,बिना किसी रोक के सबको, बैठाते
खिल जाते है, सबके चेहरे, इनको देख करके ही, आते
मुरझाने से लगते चेहरे,देख करके इनको, इस तरह से, बादलों में, जातें
जोश सा भर देती हैं,आ कर शरीर में,गर्म-गर्म धूप, इनकी यह, प्यारी
लगने लगा डट के,खड़ा गया फ़ौजी,जैसा कर रहा,मुक़ाबले की, तैयारी
इनके आते ही, चारों तरफ़ फैल जाए, रोशनी सफ़ेद और चमकदार
फूल भी मुस्कुराने लगते,जब धूप,नहलाती है इन पे,हो करके, सवार
यह अपने, समय पर ही तो हैं, हमेशा से आते तथा, जाते
हम सबको भी,वक़्त की कद्र करो, इस तरह से, सिखाते
***

ख़ामोशी में भी होती बातें

क्या ख़ामोश रह करके भी, कर सकते हैं, बातें
यह अद्भुत गुण तो,नन्हे-नन्हें से, बच्चों में ही पाए जाते
माँ ही हैं, जो इसको बहुत अच्छी, तरह से पढ़ना, जानतीं
इन बच्चों के,ख़ामोशी से कहे गये,बोल को, पहचानतीं
उनकी खामोश आवाज़ को,वह सुन कर भी करती हैं, पूरा
इसी लिये तो,कहते है कि ,प्यारी माँ का प्यार, होता नहीं, अधूरा
माँ ही तो है,जिन्हें दे रखी हैं,परम पिता ने एक ऐसी, शक्ति
तभी तो माँ की पूजा से, बड़ करके दुनियाँ में नहीं कोई, भक्ति

ये पड़ाव है आख़री ज़िंदगी का

बुढ़ापा ही तो हैं, ज़िंदगी का,एक मात्र आख़री पड़ाव
जो कि आता है ज़रूर,ज़िंदगी में हमारे एक बार
उस को अगर गुज़ार देते हंसते-खेलते हुए, हम
तो हो जाती,इस ज़िंदगी में आई थोड़ी मुश्किलें, कम
इन मुस्कुराते हुए चेहरों पर, यह झुर्रियाँ संदेश,देने आई
इस स्तिथि तक पहुँचने में, मैंने मुश्किलें तो बहुत, उठाईं
अशांति,चिंताएँ हर समय तो,ज़िन्दगी में आती ही रही
कितनी तकलीफ़ें और मुश्किलें,मेरे इस शरीर ने सही
इस लिये,कभी भी न छोड़ना,अपने शरीर की हिम्मत का, साथ
क्यूँकि तुम्हें,मंज़िल तक पहुँचने का,होता इसी का ही, हाथ

यही पर ही हैं सब कुछ

क्यूँ न हम बन जाएँ इक-दुबे के मददगार सारे
यही तो इक सोच होनी चाहिए दिलों में हमारे
जीवन हमारा तभी तो तनाव से मुक्त हो पाएगा
ईर्षा-द्वेष,घृणा,लालच यह सब मन में न आएगा
हम एक-दूसरे के दुःख-सुख के साथी तभी बन सकते
प्रेम-प्यार के रास्ते पे चलने का वादा अगर करते
स्वर्ग-नरक सब कुछ यही पे तो पाओगे
ख़ुद पर भी यही सब के सब गुर अज़माओगे
हम जैसा चाहे अगर वैसा ही हो जाएँ
तो नफ़रत, घृणा, भेदभाव,घमंड को कहीं दूर छोड़ आएँ

बच्चों और बड़ों में ये अंतर

बच्चों का भोलापन और उनकी न ख़त्म
होने वाली कहानियाँ
दर्शाती हैं,उनका नटखटपन और स्वार्थ
रहित मेहरबानियाँ
क्या कभी देखा,बच्चों को चिंता में इस
तरह,इधर-उधर घूमते ?
वह तो हमेशा ही रहता अपनी मस्ती में
इधर से उधर,कूदते
न ही किसी बात की चिन्ता,न ही उसको
किसी बात का ग़म
बस वह तो, समझता है, मैं ही हूँ , सबका
और मेरे ही, सब
बात तो है ये, बिलकुल छोटी पर, मतलब
है इसका, बहुत गहरा
हम लालची, इसको कैसे समझ पाएँ, जो
पैसों को ही, समझे प्यारा
बच्चों और बड़ों में सोचे अगर यही तो एक
भिन्नता है, आई
बच्चों में अल्हड़ पन,अपनापन और बड़ों में
अक्खड़पन ही समाई

अंतर क्यूँ

क्यूँ मुँह फेर लेते हैं, अपने ही परिवार वाले
उसे अपने बराबर, न मान कर
यही तो है,ज़िन्दगी की,एकमात्र सच्चाई,पर
दुःख होता है,यह जान कर
अमीर-गरीब की यह खाई, नासमझी में ही
तो,हर एक के दिल में डालीं
यह कभी सुना है या फिर देखा है कि फूलों
को,काँटों से अलग कर रहा, हो माली
मेरे प्रभु जी तो, सबको अपने पास, आने का
बराबर मौक़ा देते
वे तो गरीब की रुखी-सुखी रोटी का, स्वाद
भी स्वादिष्ट पकवानों, जैसा लेते
मेरे प्रभु राम जी को तो, हम सब हमेशा से ही
अच्छी तरह मानते और पहचानते
यह कैसा जानना व पहचानना जबकि उन की
कहीं बातों को ही, नहीं मानते
झूठे ढोंग करके, लोगों को तो, मूर्ख मत बनाएँ
इसको समझें और समझाएँ

बच्चों और बड़ों में ये अंतर

बच्चों का भोलापन और उनकी न ख़त्म
होने वाली कहानियाँ
दर्शाती हैं,उनका नटखटपन और स्वार्थ
रहित मेहरबानियाँ
क्या कभी देखा,बच्चों को चिंता में इस
तरह,इधर-उधर घूमते ?
वह तो हमेशा ही रहता अपनी मस्ती में
इधर से उधर,कूदते
न ही किसी बात की चिन्ता,न ही उसको
किसी बात का ग़म
बस वह तो, समझता है, मैं ही हूँ , सबका
और मेरे ही, सब
बात तो है ये, बिलकुल छोटी पर, मतलब
है इसका, बहुत गहरा
हम लालची, इसको कैसे समझ पाएँ, जो
पैसों को ही, समझे प्यारा
बच्चों और बड़ों में सोचे अगर यही तो एक
भिन्नता है, आई
बच्चों में अल्हड़ पन,अपनापन और बड़ों में
अक्खड़पन ही समाई

किसने सिखाया हमें ऐसा करना

हम सब तो जाते ही है, गुरुद्वारे, चर्च, मस्जिद,
और मन्दिर
क्यूँ फिर भी भरी पड़ी हैं,नफ़रत,घृणा,लालच
भेदभाव, दिलों के अंदर
ऐसा न करना,सब के सब द्वार,हमें यही तो है
आदत डालना, सिखाते
कैसे फिर भी, यह नफ़रत, भेदभाव, घृणा,ईर्षा
मन मंदिर में, घुस आते
हमारा यह लालच ही तो हैं, जो खैंच के यहाँ
तक, हमें ले आया
तभी तो हमारा यही मन,कभी भी सच्चा और
साफ़ सुथरा,न रह पाया
ठीक से समझे अगर,तो लालच ही है,इन सब
बुराइयों की, जड़
यह ही तो, हम सबको सिखातीं, जा और जा
करके बुरे, काम कर
हम सब इन्हीं के चक्करों में, सब कुछ भूल के
इसी में, लगे रहते
तब तो हम न ही,किसी की सुनते और न ही तो
इस से, बाहर निकल पाते
हर छोटी से छोटी बात को, बिना समझे लड़ने
पर, उत्तर आते आज
कोई भी नहीं जानता, हम सब आपस में, क्यूँ
लड़ रहे और न आती लाज

आख़िर हम क्या चाहते और क्यूँ, जो इस हद
तक आ पहुँचे, ज़रा बताएँ
इसीलिये इन्हीं बुराइयों के चलते, हम इतनी
दूर तक, निकल आएँ

भगवान के दर पर कैसे पहुँचे

भगवान के चरणों तक, कैसे पहुँच पाएँ, सुनो
एक छोटी सी, कहानी
एक आदमी, दु:खी हो कर, घर अपना छोड़ के
जंगल में,जाने की, ठानी
यहीं सोच कर कि, मिल पाऊँगा, अपने प्रभु जी
से,ये बात,उसने दिल की, मानीं
ज़रूर ही मिल जाएँगे,मेरे प्रभु जी,देखता हूँ,इस
घनघोर जंगल में, जा कर
क्या करना है अब,इस नफ़रत,भेदभाव,घृणा भरी
दुनियाँ में,रह कर ?
वह चला गया दूर, घने जंगल में, वहीं जा करके
एक छोटा सा,झोंपड़ा बनाया
जब छोड़ ही,दिया उसने, अपना घर बार,फिर वो
याद कभी, नहीं आया
बीता समय बहुत, अपना घर छोड़े, याद एक दिन
घर की उसे, लगी सताने
तुरंत छोड़ दिया वहीं, अपना लौटा डंडा, दौड़ पड़ा
घर की ओर,फिर से उसे, बसाने
हैरान रह गया वह,जब आ करके, अपने घर में ही
होते, ऐसा देखा
हंस खेल रहे थे, छोटे-छोटे बच्चे, इधर-उधर भाग
भाग कर,मचा रहे थे, शोर
ध्यान तभी गया, उसका एक सुन्दर मुस्कुराते, नन्ने
से, बच्चे की, ओर
देख करके, उस का ईश्वरीय रूप, झर-झर करके
बहने लगा,आँखों से पानी

क्यूँ मैं ऐसे ही, भटक रहा जंगल में, जबकि अपने
ही, घर में,प्रभु की है, ये निशानी
भगवान तो यहाँ,मेरे ही घर में बैठे, बजा रहे हैं, यह
बच्चों के संग, मंगल गान
मैं पागलों की तरह,मारा-मारा,भटक रहा हूँ,जंगलों
में, बन करके, मूर्ख इंसान
बच्चों जो है, घर में तुम्हारे, इन्हीं में, मिलेगा भगवान
का सुंदर मुस्कान भरा, चेहरा
भगवान तो, मिल जाएँगे, कण-कण में है,चारों तरफ़
तब दिखे,जब मन से, मिट जाएँ, अंधेरा

कष्टों का काम है आना

हमारी-तुम्हारी ज़िन्दगी में, कष्टों के, आने
जानें तो, लगे रहते
क्या हम-तुम,इन कष्टों का,अच्छी तरह से
मुक़ाबला, कर पाते ?
हमें सोचना तो यही है,क्या इसका भी कोई
है, आसान सा हल ?
हाँ हल तो इस दुनिया में,हर एक बात का है
अगर ध्यान से, चल
मुक़ाबला हम कष्टों का,धैर्य व सहनशीलता
से करे, तभी निकाल, पाएँगे
जब तक हम अपने मन से,धैर्य के साथ,चिंता
को दूर, छोड़ कर न, आएँगे

धूप जो सूर्य देता

ग़रीबों का, सर्दियों में है, एक धूप ही,सहारा
जो देता सूर्य, ताकि सर्दी से, मिले छुटकारा
इससे तो मिल जाया करती, गर्मी बिना पैसे
जाने न, यह धूप, अमीरी-ग़रीबी होती, कैसे
खुला रहता,सब के वास्ते, इसका ही,ये द्वार
कोई भी, आएँ बैठे,यही है सबका, मददगार
सर्दियों में,,यही ग़रीबों को, ठण्ड से, बचाती
अपनी नरम गर्म गोद में, उन्हें प्रेम से, बैठातीं
खुल जाते हैं, फूलों के भी मुख, इस के आते
मुरझाने लगते हैं फूल, इसे देख करके, जाते
जोश भर देती हैं धूप,सारे बदन में,जैसे आएँ
गर्म कपड़े, अगर न भी हो, तो भी, धूप बचाएँ

प्रकृति को सुन्दर रहने दो

आज देखा , एक अजीब, सा अदभुत खेल ।
**

जिस पेड़ को, अब काटने की आई थी, बारी ।
उसी पेड़ से, तोड़-तोड़ करके खाया करते थे, मीठे बेर ।
**

तब भी,हम सब को,यह समझ में न, आया ।
क्यूँ हम सब, कर रहे हैं,नष्ट यें फल और छाया ।।
**

प्रकृति ने, जो तौफे दियें, उन्हें हम बरबाद कर रहे ।
सब,यूँही,खड़े है, कम से कम कटने से ,मना तो करे ।।
**

अब भी अगर,नही समझे तो कब समझ पाएंगे ।
यही प्रकृति ,के सुन्दर नज़ारे कहां से लाएंगे ।।
***

ईश्वर का हाथ सबके साथ

हम सब का, ध्यान रखते, प्रभु जी एक जैसा
उन की नज़रों में नहीं,यह भेदभाव होता है, कैसा
प्रभु तो देते, अपना आशीर्वाद,सब को एक, समान
इसका अमीर-गरीब,देख कर नहीं करते, कोई निदान
प्यार भरा, हाथ अपना,हम सब के सिर पे, रखते
प्रभु जी तो, हमारे वास्ते, सही रास्ते ही, हमेशा चुनते

ईर्षा-द्वेष, लालच और मतभेद

जब तक,ईर्षा–द्वेष से,भरा रहेगा मेरा दिल ।
कैसे कहूँ, दूसरों को, आ करके मुझ से ,गले मिल ।।
निकाल फैकता हूँ,अगर मैं ईर्षा- द्वेष ,अपने दिल से ,अभी ।
तो बन जाएगे अपने ,और प्यारे लगने लगेंगे ,सभी के सभी ।।
क्यूँ नहीं करता है,मेरा मन फिर ऐसा ।
क्योंकि इसको,पड़ी हैं लत,अब कहा मिलेगा ,पैसा ।।
इसीलिये मेरे मन में, ईर्षा–द्वेष हैं इस कदर समाई ।
किस तरहा इसे ,निकालूँगा बता तो ज़रा भाई ।।
बस थोड़ा सा,दिल में से,लालच के ज़हर को निकाल ।
यही फिर लेगा, मन में पड़े ,मत - भेद को सम्भाल ।।

नज़ारे कहां गये सब के सब

कहां खो दिये हमने,वह सब के सब,जो देखा
करते थे,अंधेरी रातो में, नज़ारे
पेड़ो पर झुडो के झुंड,चमकते हुए,जुगनू और
आकाश पे टिमटिमाते, सितारे
यह सब का सब है,हमारी ही मेहरबानीयो का
नतीजा,जो हमने ऐसा,करना सीखा
दूर हो गये,हम सबसे,वे सुन्दर प्रकृति के नज़ारे
जो कभी लगते थे प्यारे
इसीलिये तो हमारे बच्चे,जी रहे है,अपना जीवन,
इसी प्रदूषण के, ही सहारे
नदियों का शुद्ध जल भी, कर दिया हमने, गंदगी
डाल -डाल करके, विशाला
छोड़ न पाएं, अपनी गंदी आदत, पेड़ काटने की
जो थी धरती की, सुन्दर सी माला
क्या अब भी, इसे सुधार पाएगें , नदियों के शुद्ध
जल को, न करें कभी गंदा ?
बेहिसाब,पेड़ो को काट-काट करके,अपनी प्यारी
सी धरती को, कर देगे नंगा

अनोखी ख़ुशी

घर की छत से, गिरता टप-टप, पानी
यह है, बरसात में, मेरे घर की,कहानी
जब भी यह,बरसात का मौसम,आया
बाहर तो कम, अंदर अधिक, बरसाया
तब घर के सब बर्तन, कम पड़ने लगते
जब इधर-उधर रखते,तो ये कम पड़ते
तब भी,हम सब, खुश थे, घर में, अपने
अब तो,हो गये हैं, वे भी कब के, सपने
क्या केवल, अमीरी ही, ख़ुशियाँ देती ?
ग़रीबी में कभी, ख़ुशियाँ भी, मोह लेती
प्यार और शान्ति अगर है, घर के अंदर
तभी तो अपना,घर ही कहलाता,मंदिर
खुश हूँ, चाहे घर की छत, टप टप करे
मज़ा बरसात,हमारे मन के,अंदर ही भरे
खुश रहने के,सिखाएँ ज़िंदगी, ये तरीक़े
शान्ति वहीं है,जहां से भी,हम कुछ सीखे
ख़ुशियाँ तो हमारे अंदर,उन्हें बाहर लाओ
इसके लिये कहीं न,अपने हाथ फैलाओ

ग़लतियाँ सुधारे कैसे

मैं ग़लतियों पे ग़लतियाँ, न कर पाऊँ
इतना मुझे, है समझना
जो गंदी आदत,बना ली मैंने,इसी से
मुझे अब, निकलना
यहीं वक़्त है, मैं अपनी ग़लतियों पर
अब अंकुश, लगाऊँ
तभी तो, मैं अपना और मेरे परिवार
का भला कर, पाऊँ
बस सिर्फ़ जो ये, सोच ज़रा सी मेरे
मन के, अंदर आएँ
ताकि फिर,मेरे से की गई,ग़लतियाँ
न दोहराईं, जाएँ

बदलते रिश्ते

तुरंत ही, बदल जातें है,ये रिश्ते सारे
नहीं है अगर,धन दौलत पास, हमारे
आज की, दुनियाँ में, पैसा ही, महान
हमारा न होता,बिना पैसे दिये, काम
क्यूँ मैं, अपने आप को,दे रहा धोखा
गुज़रा वक़्त, पैसा से ही,ख़रीद लेता
हर चीज़, ख़रीद ली जाएँ,यह है भूल
माँ के, प्यार के आगे, यह सब है धूल
माँ-बाप का प्यार, पैसों से न मिलता
तोड़ा हुआ फूल, कुछ समय,खिलता
पैसा ही अगर,सचमुच सब,कर पाता
तो पैसे वाले,कभी दुनियाँ से,न जाता
इसलिये कहते ,मोह दौलत का,छोड़ो
अपना रिश्ता,मोहब्बत-प्यार से,जोड़ो

माँ तेरी याद में

क्या अच्छे दिन थे ,वह भी ,मेरे घर
के आँगन मैं,एक तंदूर था ।
सब रोटियां वही ,आ करके लगाते ।
रोनक सुभा-शाम ,वही पर ही रहती
मधूर धुन ,रोटियाँ पकाने ,की आती ।
भर जाता पेट ,घुसते ही ,अपनै घर
प्यार हमेशा ,हमे मिला ,उसीके दर ।
रोटियाँ माँ ने ,प्यार से ,बनाई वा हम
सबको खिलाई ।
आज तक, न भूल पाया, तेरी बनाईं
आलू,प्याज़, बेसन न जाने ,क्या उस
मे थी भरती ।
उनकों स्वादिष्ट ,बनाने के लिए ,क्या
नही थी करती ।
धूप में खड़े ,हो करके ,उनकों बनाना
और प्यार से ,उन्हें गर्मा गर्म, खिलाना ।
माँ के सिवाए और कौन है ,जो यह सब
करता ।
वही तो है एकमात्र माँ, जिसके प्यार पर
सारा जग मरता ।
माँ का उपकार ,क्या कभी हम, भूल सकते
बस इतना ही काफी हैं, माँ को माँ तो हम
समझते ।।

हर युग में प्रभु जी आते

प्रभु जी,बच्चे को,इस तरह से, रोने पे, पूछते
क्यूँ हो ऐसे, धरती पर लेटे, क्यूँ हो यूँ उदास
क्या है कारण, कहो न, हूँ न मैं, तुम्हारे पास
बच्चा प्रभु जी को, हूँ अपना दर्द, ऐसे बताता
उस डिब्बे में रखी,है मेरी ही,पसंदीदा मिठाई
माँ मेरी उसे, वहाँ पर ऊँची जगहें, पे रखवाईं
मेरा तो क़द है छोटा, हाथ मेरा, पहुँच न पाएँ
इसलिये हूँ उदास, वह डिब्बा कैसे,पास आएँ
युग बदले चाहे, घटनाएँ वहीं बार-बार,आती
घूम फिर के, उन्हें ही, हम बार-बार, दोहराते
प्रभु कहते है, मैंने भी एक दिन,मक्खन चुराया
माँ मेरी ने भी,कई बार इसे,ऊँचा था रखवाया
तब मैंने भी, इसी तरह की,तरकीब थीं,लगाई
अब युग तुम्हारा है,बस सोच ज़रा सी लगाओ
कुर्सी जो पड़ी वहाँ,उसे खेच के,पास ले लाओ
चड़ जाओ, इसे के ऊपर, उठा लो, वह डिब्बा
खा लो मिठाई,यहीं तरकीब,मैंने भी थी लगाई

शक्ति माँ के प्यार में

छोटा सा बच्चा,जब भी,डर करके है घबराता
तो दौड़ करके, अपनी माँ की, गोद में बैठ जाता
वह यह जानता हैं, मेरी माँ कितनी भी क्यूँ न,हो कमज़ोर
मुझे बचा लेगी, तुरंत उसे अपनी गोद में छुपा लेंगी
माँ अपनी को,कभी भी, कमज़ोर मत समझना, ये मानो
उन को प्रभु ने दे रखी हैं,अपार शक्ति इस बात, को जानो
माँ का प्यार, पाने के लिये,भगवान भी इस धरती पर आएँ
आ करके, इसी धरती पर,माँ का प्यार क्या होता है, ये समझाएँ

बातें हो कैसी

क्या यह, बात भी, हैं न वहीं ?
जो आप ने, उस से थी, कहीं
यह बात जो थी,क्या है वैसी
जो दे गईं, उस को भी,उदासी
बात-बात में होता,है फ़र्क़ क्यूँ
समझाएँ इस को है, इस तरह
बातों मे ही तो,छीपा होता,दर्द
बातों में ही है, इन का, महरम
बातें ही तो है,जो हमें, गिरातीं
बातें ही तो है,जो ऊपर,उठाती
जो भी,करो बातें,हो वे, अच्छी
जो सुने उसे,लगे उसे भी सच्ची
बातें ही तो, मन का दर्द, बताएँ
तभी तो आंसू,आँखें से ही आएँ
कुछ बातें हैं,जो ग़ुस्सा,दिलाती
जैसे ही,इनमें नफ़रत,भर जाती
बात-बात में, प्यार को, जताना
माँ मेरी को, आता इसे, निभाना
यहीं तो,महा पुरुषों का, कहना
झूठी बातों से, हमेशा दूर, रहना

एक बार पूकार करके देख

सिर्फ एक बार , सच्चे मन से प्रभु को ,पूकार ।।
भाग कर ,आने को , प्रभु हर'- दम,रहते तैयार ।।
देर बिलकुल,नही लगाते,भाग के,जल्दी से,आते ।।
कभी किसीको,कष्ट में देख,न पाये ।।
तुरंत आ जाते,कष्टों का करने उपाए ।।
कष्ट-निवारण ,पालनहारे, इन्हें हम सब मानते ।।
एक बार सच्चे मन से प्रभु जी को तो पूकारते ।।

मानव

मानव की ,जीवन यात्रा, एक किताब ही तो कहलाती ।
जिसे जीवन यात्रा,समाप्त होने पर,यादों की अलमारी में ,सजा दी जाती ।
कभी कभार, कोई आ करके , इसे उठा कर पढ़ लेता ।
नही तो,ऐसे ही,अलमारी में , धूल चाटने के लिये, फैंक देता ।
अपनी जीवन यात्रा की,आप ऐसी सुन्दर किताब बने ।
जिसे यादों की,अलमारी में ना फैक कर के ,हर कोई इसे, चाव से पढ़े ।
इस तरहा की, सुन्दर किताब,कहलावाने के लिये थोड़ा सा त्याग करो ।
मन से ईर्षा,नफरत मिटाओ और इसकी जगहा दिलों में अपना स्नेह भरो ।
इस किताब, को अगर, जीवन यात्रा की ऐसी बना सकते हो,तो बनाओ ।
सब में,प्यार बाँटो,ईर्षा,नफरत,लालच वा घमंड को दूर, तक भगाओ

खोज कैसी

अपने आप में हैं,सब कुछ
सिर्फ अंदर, झाकने की है
ज़रूरत ।
**

मेरा मन अगर हैं,साफ तो
दिख जाएगी अपने अन्दर
ही प्रभु की सुन्दर मुर्त ।
**

क्यूँ फिर भटक रहे हो उन्हें
पाने के लिये यूँही,वे तों तेरे
मन मन्दिर में बैठे
खोलो मन मन्दिर का द्वारा
कर दे दूर नफ़रत,भेदभाव
का छाया अंधियारा
देखो फिर मन मन्दिर के अं-
दर ज़रूर प्रभु जी नज़र आएँ
क्यूँ न फिर दर्शन पाएँ

सावन आया

कैसा सावन का महीना आया
बादलों ने भी तो शोर मचाया
बिजली चमकी चम चम चम
चमक देख करके डर गये हम
सूर्य छीपा है बादलों के पीछे
अंधेरा छा सा गया आँखें मींचे
बुंदे पानी की देखो गिरती ऐसे
फ़व्वारा चल पड़ा नभ पे जैसे
यह कैसा अद्भुत सा है मौसम
मोहन की छत पर तो की धूप
मेरी छत पर क्यूँ हो रही छाया
सब बच्चों को ये मौसम भाता
क्यूँकि पेड़ों पे झूला बंध जाता
बच्चे यू झूलते और शोर मचाते
हंसते गाते इस पर झूलते जाते
हर मौसम होता अच्छा जो आएँ
सब मिलजुल करके यदि मनाएँ
इस बात को सदा ही है अपनाना
भेदभाव घृणा को मत पास लाना

समझदारी

कोई भी हो बच्चा,अगर वो ग़लती करें,तो उसे तुरंत, टोकों
कभी मारो नहीं उसे, ऐसा फिर, न करने के लिये, उसे रोको
उसे समझाने के लिये, थोड़ा सा तो, ज़रूर वक़्त, लगा
तभी उसने महसूस किया, ऐसा करने में भी मेरी ही थी, ख़ता
बच्चा होता है, चुलबुला ,प्यारा, भोला और नादान
तभी तो,अपनी की गई,ग़लतियों को,जल्दी जाता है, मान
स्वच्छ पानी, की तरह है, यह बच्चा, नफ़रत के समुद्र में, तैर रहा
तुलना अपने बच्चे की,कभी भी, दूसरे बच्चों से, न करना
वह तो,नहीं समझेगा,अभी उसे किस तरह से है, बनना
छोटा सा तो, है खिलौना, अभी-अभी तो,जग में, है आया
अब तक तो,वह समझ ही न सका,क्या उसने यहाँ, पाया
खेलने, कूदने और मुस्कुराने दो उसे, वक़्त ही देगा, समझा
जब तक वे,इस नफ़रत भरी,दुनियाँ से,लड़ेगा
नहीं,कैसे समझेगा, जीवन है क्या ?

सफर

मिला था जो ,सफर में कभी , अपना बन गया ।
मेरे साथ, रहता जो सदा, न जाने , क्यूं अजनबी बन ,चल दिया ।
यही तो है ,जो जीवन में, लाई एक , अनहोनी सी बात ।
जीवन ऐसे ही ,चलता रहेगा, दिन हो चाहे रात ।
कोई आ करके मिलेंगा, कोई मिल करके, बिछड़ जाएगा ।
सोचते क्यूँ हो अब, हज़ूर यह सब, मेरे प्यारे ।
चलते रहो आप भी ,इसी तरह जैसे ,चल रहे है सारे ।
कट जाएगी जिन्दगी ,इसी तरहा पूरी की पूरी ऐसे ।
मत सोच ,कौन अब रहेगा यहाँ ,और देख पाएगा सब कुछ अच्छा कैसे ।।।

मोसम ने ऐसी करवट बदली

मोसम ने ऐसी करवट बदली
गर्मी जो बन गई थी सिरदर्दी
आई वर्षा छम छम छम
छुटकारा मिला गर्मी से एक-दम
पेड़ो पर कैसे रंग रंग की पतियाँ चमकी
लगता है जैसे धरती दुलहन बन आ धमकी
पक्षियों ने भी अपनी अपनी तान छेड़ी
मोर भी यू नाचे जैसे हो बन फेरी
मेंढक टरटरा के गाने लगे
कोयल भी मधुर गीत सुनाने लगी
इन्द्रधनुष ने भी रंगदार झूला बनाया
बादल उस पर झूलने चला आया
कैसा रोचक चित्र कुदरत ने खैचा
हर कोई उसकी सुन्दरता पर नाचा
कौन है वह चित्रकार जिसने ऐसा चित्र बनाया
देखो कैसे उसने धरती को सजाया
एक हम है-जो पेड़ो को कटाते जा रहे
सुन्दर सी धरती को बेजान बना रहे
अभी भी समय है रोको अपनी आदत को
नहीं रोका तो रोक ना सकोगे आनेवाली आफत को

सुन्दर दीदार प्रभु के

प्रभु से,मिलने के लिये,कभी उनके,द्वारे
बंद नही,रहते
जब भी जी चाहे, मुझ से मिलने आओ
प्रभु कहते
**

परन्तु यहां आने से पहले,छोड़ दो बाहर
ईर्षा, नफरत और द्वेष
इन सब का वर्जित हैं, यहां अन्दर आने
पर प्रवेश
**

अन्दर आने वाले,सभी होते हैं,यहाँ पर
एक जैसे
कोई नहीं जानता यहां,किस के पास है
कितने पैसे
**

यही वह जगहा है,जो सिखाएं,निर्बलों
की सेवा,करना
आ करके यहां,भूल जाते है,सब के सब
एक-दूसरे से,लड़ना
**

क्या अब भी,आप अन्दर आने का,कोई
बहाना,बनाएँगे ?
सोचो ज़रा,ऐसी सुन्दर, सी जगहा और
कहां,पाऐगे
***

किसान की बादल से पुकार

हे! ऊपर से गुज़रने,वाले बादलों,मेरे सूखे
खेतों में भी, पानी बरसाओ
देखो सूख रहे हैं,बिन पानी के,खेत हमारे
कैसे, इन्हें समझाओ
खुश हो जाते,खेत हमारे भी अगर इन पर
वर्षा,करके भर, देते
उपकार सदा ही,मैं भी मानता तेरा यदि ये
भी,थोड़ा सा, पानी पी, लेते
भरे हुए जो खेत,पानी से सिर तक,क्यूँ बार
बार,उन्हीं पे बरस, जाते
अपना-अपना सिर,झुका कर,सूखी फसलें
पुकारे बादल को, क्यूँ न बरसातें
भरे पड़े हैं, जो खेत पानी से,सिरों तक, उन्हें
बार-बार, जब निहारतीं
ये सोच रही है,कब तक आएगी, हमारी भी
पानी भरने की बारी, ये कहारते
न जाने तब तक,सूख ही जाएँ, बिन पानी के
यह फसलें, सारी
सुन करके, दर्द भरी पुकारा,एक छोटे बादल
का,दिल भर, गया
वह तुरन्त ही, नीचे की ओर झुका और उसने
खेत को,लबालब भर, दिया
वे खेत भी पानी से भरे ऐसे,अब वह किसान
सोचता है,यह क़र्ज़ा उतारूँ कैसे

क्या खोया,क्या है पाया

कट गई, एक-दूसरे से, लड़ते-झगड़ते ये
ज़िंदगी, सारीं
परन्तु फिर भी,न मिट सकी, दिलों से यह
घृणा-नफ़रत, हमारी
सोच करके देखे अगर इस से,हमने अपनी
ज़िंदगी में, क्या कुछ पाया ?
ऐसा करने से,हमारी जीवन में, किसी तरह
का कोई, बदलाव आया
शान्ति मन अपने की गँवाई,चिन्ताओं ने ही
चारों ओर से, रखा घेर
हर तरफ़ है सुनाई देता, अहंकार,लालच व
ईर्षा और गूंजे तेर-मेर
यही तो, बस पाई,हमने लड़ने झगड़ने पे ही
एक, सौग़ात
क्या इसी पर,हम गर्व करते हैं, कि हम सब
की यही है, औक़ात
***

सुन्दर दीदार प्रभु कें

प्रभु से मिलने के लिये, कभी उनके
द्वारे बंद ,नही रहते ।
जब जी चाहे, मुझ से मिलने आओ
प्रभु कहते ।।
परन्तु अंदर, आने से पहले, छोड़ दो
बाहर, ईर्षा, नफरत और द्वेष ।
इन सब का ,वर्जित हैं, अन्दर करना
अपना प्रवेश ।।
आने वाले सभी,होते हैं यहाँ पर,एक
जैसे ।
कोई नही जानता ,यहां पर, किस के
पास है, कितना पैसे ।।
यही वह जगहा है, जो सिखाएं, निर्मल
की सेवा करना ।
आ करके यहां, भूल जाते है सब,एक
दूसरे से लड़ना ।।
क्या आप, अभी भी ,अन्दर नही ,आ-
ने का कोई बहाना बनाओंगे ?
सोचो ज़रा,ऐसी सुन्दर सी,जगहा और
कहां पाओगे ।।
***

भलाई

कौन है,जो कर सकता,किसी की
भी भलाई
इस ग़लतफ़हमी में,कभी भी रहना
न,मेरे भाई
भगवान की नज़रें, जब किसी पर
मेहरबान,हो जाएँ
तभी वह, दूसरों की,भलाई करने
के लिये,आगे आएँ
ऊपर बैठ करके, ईश्वर करा रहा
आप से,ऐसा
क्यूँकि वह, समझते हैं,आप करने
योग्य हो, वैसा
जब आप, करते हो,किसी की भी
इतनी सी, भलाई
तब ज़रूर करो,ईश्वर का,धन्यवाद
क्यूँकि,मेरी भी,बारी आई

जीवन मेरा

क्या यहीं है, मेरी ज़िन्दगी, जो
मेरे हिस्से, आई ?
जिसमें, प्यार की जगहें नफ़रत
घृणा,भेदभाव समाईं
चाहतें हुए भी,मैं इसको,छोड़ ही
नहीं, पाया
क्यूँकि,मेरे मन में ही था,लालच
जो गहराई तक, समाया
तभी तो, इसे छोड़ने का, ख़्याल
तक, न आया
***

मेरे देश के शाहिद

हम शाहिदों के,परिवारों के लिये,क्या कुछ
कर, सकते ?
क्यूँ न जो आंसू, उनकी आँखों से बहे, उन्हें
ही हम बाँट, लिया करते
जो इनकी, आँखों से,बहे है आंसू,कभी यह
बेकार न, जाने पाये
चलों सबसे मिल करके,इनके दु:ख दर्द को
ही, बाँट आएँ
नमन है हमारा,देश के, शाहिदों को और उन
की, देश भक्ति को
क्या हम छोड़ सकते है, उनके वास्ते नफ़रत
ताकि इससे, मुक्ति हो ?
उन शाहिदों के लिये,हम कर दे, अपने दिलो
से ईर्षा-द्वेष का, त्याग
समझो हमने,कुछ तो किया,नफ़रत,घृणा को
छोड़ करके, ये इन्साफ़
***

मेरी माँ

रुक जाती थी,चलते-चलते,देख कर,कोई पास
करती उस से फिर,स्नेह से, उस के घर की, बात
मन में, उस के नहीं रहता था,किसी तरह का,मैल
न ही तो, किसी से रखतीं, किसी क़िस्म का, वैर
बात प्यार से करके, पूछती उसके,घर के हालात
इस मे, ही छलकता, उस का दूसरे के प्रति, प्यार
ठहर-ठहर कर के, वह अपने कदम, न थीं रखती
क्यूँकि, वह तो, हमेशा ही, तेज़ कदमों से, चलती
कल तक, लगता था, साथ है मेरे और सदा,रहेगी
रब जानें,अब तो कब,आ करके,मैं हूँ यहाँ, कहेंगी

झुकना

झुक जाना कभी भी, इंसान की
नहीं होती,मजबूरी
यह तो,वह महान काम,जो सब
के लिये है,ज़रूरी
झुक जाना भी, तो होती हैं एक
तरह की,हिम्मत
उसी से, पता चलता है, कितनी
सहनशक्ति का है, स्तर
हर किसी के, बस में, नहीं होता
ये सब,करना
जब कर लो,मन को,तैयार तभी
आएगा,इससे लड़ना
जो सीख गये,किसी के भी आगे
झुक जाना
उन्होंने ही सीख लिया, आपस में
कैसे, मिल करके, रहना
***

शिक्षा फूल की

मैंने बाग में,जा कर के देखा,कैसे फूल,मुस्कुरा रहे
देख अपने, सुन्दर रंगों को, वे सिर ऊँचा किये खड़े
उन को,मुस्कुराते हुए देख,मुझ को भी,ख़ुशी मिली
चारों तरफ़,उन खिलते फूलों की, महक जो खिली
तभी वहाँ पे, यूँही घूमने के लिए,एक आदमी आया
उसने उन खिले हुए, फूलों को देखा और मुस्कुराया
जुही एक हाथ उसका,खिले हुए,फूल की ओर बड़ा
जब वह उसे तोड़ने लगा,तो मुस्कुराता वे, फूल डरा
डरते डरते,एक फूल ने, उससे पूछा,कहाँ ले जाएगा
चड्ढा दूँगा, भगवान के चरणों में,वहाँ पर,चैन पाएगा
फूल बोला, क्या यह सारी धरती, उनकी ही, है नही
मैं भी उन्हीं के, चरणों में खड़ा हूँ,क्या ये हैं,नहीं सही
आते जाते दुःखी लोगों की, आँखों में सुख हूँ, भरता
मैं भी तो, दुनियाँ में, आकर,एक अच्छा काम,करता
यहाँ चारों,यह जो गन्दगी पड़ी है,पहले उसे, तो हटा
फिर अपने, उन मन्दिरों को भी लेना,फूलों से, सजा
अब जब तोड़ ही,लिया मुझे, तो सुन,रखना है, कहाँ
पढ़ते जिन स्कूलों में,हमारे बच्चे,रख देना जा के वहाँ
तभी समझ लूँगा,जीवन तो सफल,हो गया यह, मेरा
तोड़ तो दिया मुझे,फिर भी जा,जीवन मुस्कुराए,तेरा

ख़ुशियों हमारी

यहाँ छोटी-छोटी, ख़ुशियाँ है,ढेरों सारी
आतीं रहतीं हैं, यह ज़िन्दगी में, हमारी
बड़ी ख़ुशी, के लिये, हम भागते, रहते
इस लिये,छोटी ख़ुशी को,ही छोड़ जाते
क्यूँ न हम,इस छोटी ख़ुशी को, अपनाए
इस को ही, क्यूँ न हम बड़ी ख़ुशी,बनाएँ
ख़ुशी बड़ी हो या छोटी,नहीं कोई, अंतर
ख़ुशियाँ पाने के लिये, ही तो है, यह मंत्र
बड़ी ख़ुशी के फेरे में,छोटी को न गवाओ
ख़ुशी तो ख़ुशी है, जो भी मिले,अपनाओ
जिन्हें पाने, के लिये, लड़ते रहे, सदा हम
ख़ुशी जो भी, मिल जाएगी, नहीं है, कम
मेरे ही, हाथों में है,इसे छोटा-बड़ा,बनाना
शुरू तो करो,अपने मन से, नफ़रत हटाना
ख़ुशियाँ ख़ुद,आ करके,हमारे क़दम, चुमें
कहकहे ही कहकहे,चारों तरफ़,हमारे गुंजे
छोटी सी है, बात अगर समझ में, आ जाएँ
आओ भेदभाव,को भूल करके,प्रेम अपनाए

स्नेह माँ का बच्चों के साथ

क्यूँ रहती हैं, तेरी आँखें, देखतीं हूँ
मैं, हमेशा ही, नम
मैं हूँ माँ तेरी,बता मुझे,हर लूँगी मैं
सारे तेरे, ग़म
न हो पाएँगी,फिर कभी,आँखें तेरी
इस तरह,से गिली
दु:ख दे दो, मुझे अपने, है जो सारे
समझ मैंने, सब ले ली
आँसू तेरी आँखों के,मैं अपनी आँखों
में भर लूँ
माँ का प्यार, अगर इसे कहते, क्यूँ
फिर उसी से, दूर हूँ
***

आक्सीजन का महत्व

प्रकृति ने तो, भर था, धरती को पेड़ों से
बनाए थे, अनगिनत मुफ़्त, आक्सीजन
के यह, भंडार
**

हम काट रहे हैं,उन्हीं पेड़ों को,बिना सोचे
समझे व ख़त्म करते, जा रहें,आक्सीजन
यहां की, तमाम
**

जब क़दर न की,हमने प्रकृति की,जो देती
हमें सब कुछ मुफ़्त, अब भटक रहे,पैसे ले
करके, सब
**

आने वाली, संतानों के लिये,अभी भी बचा
सकते,हम अपनी,प्रकृति को, इन पेड़ों को
छोड़ दे, काटना अब
***

अच्छा लगेगा उनको भी

कुछ पल, हंस करके,गुज़ार लो
बुज़ुर्गों के, साथ
जिन्होंने सदा, मुश्किलों में रखा
सिर पर, हाथ
क्या उन के लिये भी, न है थोड़ा
सा वक़्त, पास हमारे ?
जिनकी मेहनत से, सीना तान के
ख़ुशियाँ मनाते, हो सारे
वहीं अगर अपना पसीना,न बहाते
तो इतनी ख़ुशियाँ, कहां पाते
कुछ समय ही, ये हंस कर,बिताना
चाहतें है, आपके साथ
क्यूँ झिझकते हो,पकड़ने में, उनके
कँपते हुए,कोमल से, हाथ
तुम्हें हमेशा, दिया करते थे, सहारा
तुम को चलने में, दिन-रात
आज उन्हें दो,थोड़ा सा वक़्त, ताकि
हंस कर, गुज़ारे ले, एक साथ

अद्भुत नज़ारे

मेरे घर की, छत से,दिखते,ये नज़ारे
मन्दिर,मस्जिद, चर्चा और है गुरुद्वारे
जब नज़र जाती, उन्हीं द्वारों की,ओर
यहीं है, सब अभी भी, घर के,हर मोड़
हर किनारे पे, होता है,किसी का, द्वार
झुकाता है,उन्हीं के,द्वारों पे,जग सारा
हर मज़हब,हर जातियों,के लोग,आते
ईश्वर न रोकता, क्यूँ यहाँ पे हो, जाते
हर एक द्वार, देता है उन को,आशीर्वाद
करता है , यह तो, सभी का, परोपकार
पूछता नहीं, कोई उनसे,धर्म तथा जाति
आने वाले के,दिल में,ईर्षा कैसे,समातीं
यह स्नेह तो,सिर्फ़ मिलता, प्रेम-प्यार से
ना मिलता, किसी पे किये,अत्याचार से

***

सुन्दरता फूलों की

पहली किरण, जब सूर्य की, इन फूलों पर पड़ती
झूम उठती,फूलों की डालियाँ,हंस-हंस बातें करती
अच्छा लगता, इन को देख करके, इस तरह मुस्कुराते
इस लिये, फूल सब को,अच्छे लगते व मन को, भाते
यह चमकीला पन, इन को, सूर्य देवता दे कर, जातें
ठंडक इन को, चाँद की चाँदनी,रोज़ ही देने, है आती
कोमलता इन को, आ करके,पहुँचा देते ओस के, कण
तभी तो, रंग-रंग के,फूलों को देख,हमारे मोह जाते, मन
जिस जगहों पर, यह खिलते,उसी स्थान की,सुंदरता बढ़ते
क्यूँ फिर हम,फूलों के खिलते ही,इनको तोड़ने, चले आते
तोड़ करके हम,क्यूँ उन सब,लोगों पर ही है, बरसाते
जो कभी भी, किसी के, दुःख-दर्द को, न समझ, पाते
यह भी तो, बच्चों की ही तरह,रहते हरदम साथ, हमारे
न छीनो,तोड़ कर इन्हें, इनके पौधों से,उन के, साथी प्यारे
माली ने,बड़ी मेहनत करके,इन्हें मुश्किलों से, लगाया
जब यह, बड़े हो करके, मुस्कुराने लगे तो तोड़ने, चला आया

प्यारा सा बचपन

प्यारा सा बचपन याद आया
याद आ गया,मुझे को फिर से,मेरा
वहीं गुज़रा, ज़माना
वह भोला,सा बचपन,ग़लतियों को
करके,बहाने बनाना
ये लड़ना -झगड़ना, तो हमारे लिये
तब थी, छोटी सी, बात
जिसके साथ,पहले लड़े थे,उसी के
गले में,डालते थे, हाथ
न नफ़रत, न ही किसी के प्रति, मन
में कभी,भेदभाव रहता
हँसी में, कहकहे लगाते हुए, एक दू-
सरे के घर में, आता जाता
खाना खाने, की चिन्ता, न कभी हम
सब ने, की
जिस घर में खेलते,वहीं पे ही,अपनी
भूख, मिटा ली
माँ इस की या उस की,प्यार सभी तो
एक जैसा, ही देती
इसके बदले में,माँ सिर्फ़ बच्चों से, न
लड़ने का,वादा लेती

यादे बचपन की

याद आ गया,फिर से ,मेरा वही
गुज़ारा,ज़माना ।
वह भोला सा बचपन, गलतियां
करके,बहाने बनाना
लड़ना झगड़ना,होती थी ,हमारे
लिये,छोटी सी,बात
जिसके साथ,पहले लड़े थे,उसी
के गले में,डालते हाथ
न नफरत, न ईषा-द्वेष, न किसी
से,कभी भेद-भाव,रहता
हंस कर कहकहे,लगाते हुए एक
दूसरे के घर,आता जाता
खाना खाने की, चिंता कभी,नही
हमने की
जिस घर , में खेलते, वही पर ही
अपनी,भूख मिटा ली
माँ इसकी ,या उसकी, प्यार सब
को एक जैसा देती
इसके बदले में,माँ सिर्फ,बच्चो से
न लड़ने का , वादा लेती ।।

बरसात की खुशियाँ वा गम

हे!जाते हुए बादलों,ज़रा सुनते जाना
अगली बार, जब भी आना ,पानी तो
थोड़ा सा, कम ही बरसाना
डूब रहे है,खेत- घर, हम सब के सारे
फिर जिएगे, किसके सहारे
लगता है अच्छा,वर्षा शुरू,जब होती
भरता है पानी, जब
खेतों वा घरों मे,तक ये सब देख कर
सुध-बुध, हैं खोती
गलती हमारी,जो काटे पेड़,हम ने ही
थे, सारे
बताओ अब पानी,रुकेगा किस ओट
के, सहारे
तूफान बन कर,नदियाँ जब, हमारे ही
खेतो और घरो से, गुज़रती
बहा देती,सारे घर को, पानी से,उनको
जब, भरती
हाहाकार मच जाता,चारो ओर देखते
ही, यह नज़ारा
जुदा होते परिवार,अपने ही घर-खेतो
से,जो था उन्हे, प्यारा
ग़लती किसी ने की,भुगत रहा है,कोई
किसी न किसी से, गलती तो होई

सपना

सुनो सुनाता हूँ,एक कहानी, यह नही है
बहुत पुरानी ।
कुछ,दिनों की बात ,यह शुरू हुई सपने
के साथ ।
सोऐ सोऐ देख रहा था , एक अद्धभुत
सपना ।
मैं चला जा रहा था,एक जंगल में जहां
नही था कोई अपना ।
चलते चलते रुक गया, सुन करके एक
जगहा पर शोर ।
एक अनोखी ,चिज़ को देखा, आते हुए
अपनी ओर ।
एक पहाड़ ,मेरी तरफ ,चलते हुए ऐसे
आया ।
हैरान रह गया,जब उसने अपने मुंह को
खोला और बताया ।
जिससे तुम मिलना चाहते हो, वह नही
रहता है यहां ।
मै ने घबराते हुए उस से पूछा फिर वह
मिलेगा कहां ।
जिस जगहा वह मिलेगा, उसने अपना
मुँह में ही कुछ गुनगुनाया ।
जो आज तक भी, मैं समझ न पाया ।
लगता है, वह जगहा है,मेरे प्रभु का एक-
मात्र सुन्दर सा दर ।
जहाँ आज तक,न रख सका,अपना पापी
सर ।।

माँ मेरी का त्याग

तेरे सारे दुःख मेरे, मेरे सारे सुख तेरे
माँ अपने बच्चों से कहती,यही तो है
मातृप्रेम की रीत, इस जग में सदियों
से ही,चली आती ।
न जाने क्यूँ, बच्चे इस, बात को भूले
क्यूँ सोचा नही, उस ने यह कि,वे भी
माँ की गोद मे,थे झूले ।
कौन सा अब ये,नया ज़माना हैं आया
जिसके आते ही, मोह बेटों के ,मन से
अपनी माँ से, दूर भगाया ।
क्या हम ,भूल गये, अपने चलें,आ रहे
सभी,रिश्ते-नाते,जो हमारे दुःख-सुख
में, हमेशा साथ थे, आते ?
माँ हमारी ने, सदा याद रखा, अपने घर
को स्वर्ग बनाना,दिन-रात मेहनत करके
इसे सजाया,
किन्तु भूले, हम सब बनाए,अपनें ही ये
रिश्ते-नाते, इसीलिये कैसे ,हम मातृप्रेम
को, समझ पाते ।।
***

प्रेम प्रभु जी का हम सब पर

क्यूँ रहते हो, मुझ से, डर करके इतने, दूर
मैं तो हमेशा से ही, रहता आया तुम्हारे पास
तुम अगर चाहो तो, छोड़ सकते हो, मेरा हाथ
परन्तु जब मैं,पकड़ लेता हूँ,हाथ तो,छोड़ता न, साथ
यहीं तो है, परम पिता परमात्मा का, कहना
जितना हो सके,कभी भी,मुझ से दूर, मत जाना
जो भी दु:ख-दर्द है, तुम्हारे अंदर मुझे, बताओ
हर दूँगा सारे, सिर्फ़ एक बार,मेरे क़रीब तो, आओ
तुम्हारे जितने, दु:ख-दर्द हैं, मुझ को,दे दो
सारी अपनी ख़ुशियाँ,जो भी माँगो मुझ से, ले लो
धरती के,हर कोने में,रोज़ बाँटता रहता हूँ
यहीं तो,हर ग्रंथ,हर जगहों,कहना चाहता हूँ
इस लिये, न ही छोड़ देना,न कभी टूटने देना, विश्वास
सब बुराइयों को,ख़त्म कर दो,एक बार, आ तो पास

वक़्त यूँ ही गुज़र जाता

जीवन चक्र तो यूँही, चलता ही रहता
चलते ही रहेंगे, ये दुःख-सुख, के पल
इन्हें देख करके भी, कभी मत घबराना
भूला दो इनको,अनदेखा सा जान कर
पता भी, न चले, कब आए व चले गये
सोच अगर यही हैं,तो वक़्त बीत, जाएँ
कष्ट कब, आए थे, ये हम,देख न, पाए
जब मुश्किलों से लड़ना, सीख जाओगे
तभी तो दुख-दर्द,सब कुछ,भूल पाओगे

***

क्या कहता हैं मन मेरा

मेरा यह मन,मुझ से ही
तो, पूछता
मुझ से,झूठ बोलना,क्यूँ
न, छूटता
मेरी और मेरे मन की, ये
होती, लड़ाई
कई सदियों से, यह ऐसे
चलती, आई
जीत तो,हमेशा, मेरे मन
की, होतीं
क्यूँ फिर,मेरी सोच,यूँही
रहे, सोतीं
सदा मन ने, जो कहीं है
बात, सुनो
इस तरह से,अपनी सहीं
बातों, को चुनो

माँ ! एक बार कहो न

सारी रात, जागती रहतीं, मेरी माँ
जब तक, मुझ को, नींद न, आती
सारा दिन, वह बैठी रहती, अकेले
जब तक मैं,घर वापिस,नहीं आता
वह दु:ख-सुख में, हमारे साथ,, रहे
इस लिये तो सभी,इन्हें माँ ही , कहें
बैठने न देना,माँ को चिंतित,अकेली
माँ तो,हम सबकी, प्यारी सी सहेली
सब कुछ तो, इस जग में, मिल जाएँ
परंतु माँ तो कभी,लौट करके न आएँ

क्यूँ सोचें इतना

क्यूँ सोचते हैं, हम इतना,आएँ
दु:ख के, बारे
काहे नहीं सोचते, सुख भी कभी
साथ थे, हमारे
जैसे यह,दिन आएँ, वैसे यह भी
तो,चले जाएँ
सोच ज़रा सी को, मन में रख के
क्यूँ न,हंस करके, बिताएँ

अच्छे वे पूराने दिन

क्या ही अच्छा था,वहीं पूराना,ज़माना
तब नहीं,पड़ता था,कहीं दूर,तक जाना
सब तो मिल करके,एक साथ,ही रहते
दु:ख-सुख,दोनों मिल करके,हम सहते
यदि गिले-शिकवा,किसी से भी, होता
उसको बैठ कर, बड़ा ही सुलझा, देता
हम बड़ों की,कही गई बातों को,मानते
क्या किसकी,है ज़रूरत, बड़े ये जानते
रात्त को, कोई कभी, भूखा तो न, सोता
क्यूँकि उस समय, भेदभाव ही, न होता
दूसरे की,इच्छा क्या,है, बड़े सब,जानते
तभी तो सब, घृणा नहीं,प्यार ही, बाँटते
काश कि वैस दिन, फिर एक बार,आएँ
ताकि प्यार रहे,नफ़रत यहां से,तो जाएँ

कैसी सुंदर प्रकृति है हमारी

कौन है, वह चित्रकार, जो भरता जा रहा
तरह-तरह के रंग, इन फूलों में
कोई तो है,जो झूला रहा, इन बादलों को
इन्द्रधनुषी , झूलों में
क्या यह वहीं है,जिन्होंने इन फूल पतियों
को सुंदर, आकार दिया ?
हाँ! यह वहीं प्रकृति है,जिसने हम सबको
यहां पे रहना, स्वीकार किया
हम फिर भी,काटते जा रहे हैं,ये घने सुंदर
जंगल और पेड़
बदलते जा रहे हैं, हरी-भरी धरती, को भी
बना कर,बंजर मिटी, का ढेर
क्या हम सब, बिना पेड़,फूलों की,धरती पे
रह पाएँगे ?
सोचो ज़रा, यह सुन्दर, तरह-तरह के पक्षी
अपने घोंसले,कहां बनाएँगे
यह प्रकृति हमारी,बहुत ही सुन्दर है,इसको
सुन्दर ही, रहने दो
यहीं रंग-रंग के प्यारे-प्यारे फूल,हमारे ही
बच्चे है,इन्हें ऐसे ही, मुस्कुराने दो

नन्ना बच्चा और उसका चंदा मामा

सुन्दरता देख चाँद की, पलने में लेटा ,छोटा
सा बच्चा भी मुस्कराया ।
नन्हे-नन्हे अपने हाथों को, उसने किस तरह फैलाया ।
जैसे कह रहा हो,आओ मेरे पास आ जाओ
चाँद ने देखा जब,उस नन्ने चाँद का यह हाल
भाग कर आया,वह चाँद भी,उसके पास ।
बच्चा ज़ोर से, हंसने लगा, देख उस चाँद की ओर ।
क्या हो ,रहा है बच्चे, चाँद ने जब पूछा, क्यूँ
मचा रहे शोर ?
खामोश दोनों थे,फिर भी बातें करते,वे नज़र आएं ।
नन्ना पूछ रहा था, मामा मेरे लिये खिलौने क्यूँ नही लाएं ।
खामोशी में, चाँद ने जो कुछ कहा, हैरान रह
गया,सारे के सारा जहान ,तब ।
मै भी तो,एक बड़ा सा,खिलौना हूँ, सब बच्चो
के लियें अब ।
रोज़ ऊपर छत पर,तुम्हारी आऊंगा, तुम से ही खेलने ।
क्या मुझे से खेलना ? पसन्द हैं तुमे, इस तरह
लगे रहे, खामोश हो कर भी, बोलना ।
अब तो बोलो,नन्ने से चाँद,अपना छोटा सा मुख तो खोलों ।
यह सुन छोटा सा चाँद मुस्काने लगा और धीरे से
नींद की गोद में जाने लगा ।।

बच्चों और बड़ों में ये अंतर

बच्चों का भोलापन और उनकी न ख़त्म
होने वाली कहानियाँ
दर्शाती हैं,उनका नटखटपन और स्वार्थ
रहित मेहरबानियाँ
क्या कभी देखा,बच्चों को चिंता में इस
तरह,इधर-उधर घूमते ?
वह तो हमेशा ही रहता अपनी मस्ती में
इधर से उधर,कूदते
न ही किसी बात की चिन्ता,न ही उसको
किसी बात का ग़म
बस वह तो, समझता है, मैं ही हूँ , सबका
और मेरे ही, सब
बात तो है ये, बिलकुल छोटी पर, मतलब
है इसका, बहुत गहरा
हम लालची, इसको कैसे समझ पाएँ, जो
पैसों को ही, समझे प्यारा
बच्चों और बड़ों में सोचे अगर यही तो एक
भिन्नता है, आई
बच्चों में अल्हड़ पन,अपनापन और बड़ों में
अक्खड़पन ही समाई

भगवान के दर पर कैसे पहुँचे

भगवान के चरणों तक, कैसे पहुँच पाएँ, सुनो
एक छोटी सी, कहानी
एक आदमी, दु:खी हो कर, घर अपना छोड़ के
जंगल में,जाने की, ठानी
यहीं सोच कर कि, मिल पाऊँगा, अपने प्रभु जी
से,ये बात,उसने दिल की, मानीं
ज़रूर ही मिल जाएँगे,मेरे प्रभु जी,देखता हूँ,इस
घनघोर जंगल में, जा कर
क्या करना है अब,इस नफ़रत,भेदभाव,घृणा भरी
दुनियाँ में,रह कर ?
वह चला गया दूर, घने जंगल में, वहीं जा करके
एक छोटा सा,झोंपड़ा बनाया
जब छोड़ ही,दिया उसने, अपना घर बार,फिर वो
याद कभी, नहीं आया
बीता समय बहुत, अपना घर छोड़े, याद एक दिन
घर की उसे, लगी सताने
तुरंत छोड़ दिया वहीं, अपना लौटा डंडा, दौड़ पड़ा
घर की ओर,फिर से उसे, बसाने
हैरान रह गया वह,जब आ करके, अपने घर में ही
होते, ऐसा देखा
हंस खेल रहे थे, छोटे-छोटे बच्चे, इधर-उधर भाग
भाग कर,मचा रहे थे, शोर
ध्यान तभी गया, उसका एक सुन्दर मुस्कुराते, नन्ने
से, बच्चे की, ओर
देख करके, उस का ईश्वरीय रूप, झर-झर करके
बहने लगा,आँखों से पानी

क्यूँ मैं ऐसे ही, भटक रहा जंगल में, जबकि अपने
ही, घर में,प्रभु की है, ये निशानी
भगवान तो यहाँ,मेरे ही घर में बैठे, बजा रहे हैं, यह
बच्चों के संग, मंगल गान
मैं पागलों की तरह,मारा-मारा,भटक रहा हूँ,जंगलों
में, बन करके, मूर्ख इंसान
बच्चों जो है, घर में तुम्हारे, इन्हीं में, मिलेगा भगवान
का सुंदर मुस्कान भरा, चेहरा
भगवान तो, मिल जाएँगे, कण-कण में है,चारों तरफ़
तब दिखे,जब मन से, मिट जाएँ, अंधेरा

जरूरत वा ज़रूरतमद

जरूरत की ,चिज़ो का, यूँही
घट जाना ।
वह जरूरत मंदों, तक पहुंच
न पाना ।
यही हैं, लालच की ,अंनोखी
सी देन ।
यही तो सिखाती हैं, पैसे का
क्या है खेल ?
बुरे समय ही अगर न आएँ तो
पैसा कब कमाए
पैसा कमाना ,ही हो,जिसका
सिर्फ़ धंधा ।
उसको, तो चाहिये ,ऐसा ही
वक्त मंदा ।
सोचो ज़रा , गरीब को अगर
नही मिलेगा, खाना ।
तो क्यूँ चाहते हो ,जमाखोरी
को, फैलाना ।
कौन चाहेगा, ऐसे दिन कभी
आएं ।
खुद तो,अपना पेट भरे,दूसरे
भूखे ही, सो जाएं ।

भगवान् हर जगहा रहते

सब के, साथी है, एक ही राम
मुझे भी, अपना लो,मेरे श्याम
चला आया,अब मै,तेरे ही द्वारे
किसी ने तभी,पूकारा अन्दर से
आ जा रे ।।
अन्दर जो , मैंने कदम, बढ़ाया
तो कानो ,में मैंने ,अमृत जैसा
रस पाया ।।
झुक गया,सिर मेरा,उसके आगे
सोए हुए नैना,अब फिर से,जागे
आँखे खोल ,मैंने जैसे ही ,देखा
उस ओर ।।
अद्भुत नज़ारा था, जो देखने से
दिल में ,मच गया ,शोर ।
देखते-देखते,मेरी आँखों में ,भर
आए आँसू ।।
होश हवाश ,सब वही, खोने लगे
बताऊ मैं कैसे ।
एक आवाज़ ,मेरे कानों में ,आई
जागो क्यूँ रोते ,हो मेरे भाई ।।
मै तो यही था,क्यो मुझे न पुकारा
तुम से मिलने,मैं आ जाता,दुबारा
देखो मैं तो,सब जगह पर,हूं रहता
फिर भी तू,मुझसे मिलने,क्यो नही
आता ?

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

लड़े थे ,हम सब ,मिल कर आज़ादी को
पाने के वास्ते
अब ,आज़ादी के बाद , क्यूँ पकड़ लिये
अलग-अलग रास्ते
क्या हुआ,जो रूठ गये,हम से ही,हमारे
प्यारे साथी ?
क्या कहेंगे,उन से जो लड़े थे,साथ और
चूम ली,देश की माटी ?
भूल गये वे ,कसमे-वादे,मिल करके रहे
गे, खाते थे तब
किसने कर दिया दूर, एक-दूसरे से हम
सबको ही अब
आज फिर से आया,आज़ादी मनाने का
प्यारा सा, दिन
मिला लो एक-दूसरे से हाथ,नकि दूसरों
की गलतियों, को गिन
हम सब के सब हैं तो, इसी प्यारे से देश
के ही वासी
क्यूँ फिर लड़ते आपस में , तेरी है मथूरा
और मेरी, हैं काशी
आज लेते कसम,इस सुभ दिन पर, हम
मिल करके, रहेंगे
सब मिल करके ,एक साथ ,ऊँचे स्वर में
जय हिन्द , कहेंगे

किसान की दर्द भरी बादलों से पुकार

हे ! ऊपर से,गुज़रने वालें बादलों, मेरे सूखे
खेतों पर भी, बरस जाओ
देखो सूख रहे है ये खेत,बिन पानी के,सब
ज़रा सा रहम तो, दिखाओ
खुश हो जाते,खेत हमारे भी,यदि आप इन्हें
भी, पानी से, भर देते
उपकार सदा मैं और ये खेत,आपका मानते
यदि थोड़ा पानी, ये भी पा लेते
भरे पड़े हैं जो खेत, पहले से ही, क्यूँ उन्हीं पे
बार-बार ही, बरस जाते
अपना सिर झुका करके,सूख रही ये फसलें
पुकारें,बादलों यहाँ पे, क्यूँ न आते
जिन खेत में, पानी भरा है, उन्हीं को यह सूखे
खेत बार-बार, निहारते
सोचते कब तक,आएगी मेरी भी बारी,पानी में
नहाने की, यही विचारते
यह बिन पानी के फसलें,तब तक सूख, ही न
जाएँ, सारी की सारी
न करो देर,अब और बरसने में, पहले कर चुके
देरी, अब तो मेरी, बारी
सुन करके, दर्द भरी पुकार,छोटे से बादल का
दिल दु:ख से, भर गया
वो नीचे की ओर झुका और उस खेत को तुरंत
बरस के पानी से, भर दिया